

कोविड-19 का परिवारों पर प्रभाव

Impact of COVID-19 on Families

Paper Submission:15/05/2021, Date of Acceptance: 23/05/2021, Date of Publication: 24/05/2021

Abstract

देश का विकास कार्य भिन्न क्षेत्रों पर निर्भर करता है और विकसित या विकासशील देशों की मानव सभ्यता की सहनशीलता भी चार क्षेत्रों से प्रभावित होकर समय-समय पर अपनी परीक्षा देती रहती है। यह विकास के चार योग शिक्षाए सामाजिक पर्यावरणीय और आर्थिक सस्टेन वलिटी, यह चारों में घटक है जो प्रत्यक्ष रूप किसी भी देश के विकास धारा को गति देते हैं। यह चारों क्षेत्र किसी ना किसी प्रकार से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब एक क्षेत्र प्रभावित होता है जब एक हलचल मचाता है तो बाकी सारे लोग उससे प्रभावित होते हैं मानव सभ्यता ने या कहीं मानव जाति ने अपने आप को पर्यावरणीय आपदा को और घटनाओं से निपटने के लिए स्वयं को इस प्रकार ढाल लिया है कि मानव कोई ना कोई रास्ता तैयार कर ही लेता है। ज्यादातर हम जो प्रभावित होते हैं वह है प्राकृतिक आपदाएं या कहे पर्यावरणीय उथल-पुथल, परंतु इन सब का जिम्मेदार भी तो मानव ही है वर्तमान समय में मानव विकास के नाम पृथ्वी के भूदृश्यओप महासागरों और वायुमंडल के प्राकृतिक स्थिति को परिवर्तित कर रहे हैं बिना यह विचारे कि इन परिवर्तनों के बदलावों को सहन करके अचानक आने वाले विनाशकारी झंझवातो का सामना मानव खुद कर भी पाएगा या नहीं।

The development work of the country depends on different areas and the tolerance of human civilization of developed or developing countries is also influenced by the four areas and gives its test from time to time. These four yogas of development, social, environmental and economic sustainability, are the components of these four which directly accelerate the development stream of any country. These four regions are connected to each other in some way or the other. When one area is affected, when there is a stir, other people are affected by it. Somebody prepares a way. Most of us who are affected are natural disasters or environmental upheavals, but human beings are responsible for all this. Consider whether human beings themselves will be able to cope with the sudden devastating storms by tolerating the changes of these changes.

मुख्य शब्द: कोविड-19, प्राकृतिक आपदाएं, उथल-पुथल, विनाशकारी एसंक्रमण, विश्वव्यापी।

COVID-19, natural disasters upheaval and catastrophic infections, worldwide.

प्रस्तावना

कोरोना (कोविड-19) के प्रकोप से समूची दुनिया में हाहाकार मचा हुआ है। स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि सोचकर भी भय लगता है अतीत वर्तमान और भविष्य सभी अंधकार में है। जहां पर इस संकट से देश की चूले हिला दी है वही सब की जिंदगीयों को आशंकाओं से भर दिया है। यह प्रकोप विश्वव्यापी महामारी के रूप में हमारे सामने है अब जान ले कि महामारी कहते किसे हैं।

एक छोटी सी अवधि में बड़ी संख्या में लोगों को होने वाली बीमारी का तेजी से प्रसार है। ऐसी बीमारी जो संक्रामक होती है एक दूसरे के संपर्क में आने से और छूने से फैलती है। संक्रामक रोगों की महामारी आम तौर पर कई कारकों के कारण होती है जिसमें सबसे बड़ा कारण स्वास्थ्य केंद्र के दिशा निर्देशों व नियमों को ना मानना उनकी अनुपालना ना करना इसका कारण देश की आबादी की पारिस्थितिकी में परिवर्तन जैसे एक जगह में आबादी का घनत्व की दृष्टि में। आमतौर पर देखा गया है कि महामारी तभी होती है जब अचानक से प्रतिरक्षा की क्षमता कम हो जाए या नीचे आ जाए। एक महामारी एक स्थान तक सीमित हो सकती है परंतु अगर दूसरे देशों में बीमारी ज्यादा संख्या में लोगों को प्रभावित करती है तो विश्वव्यापी महामारी कहा जा सकता है। हर प्रकार की बीमारी को महामारी घोषित नहीं कर सकते बहुत दुर्लभ बीमारियों के भी कुछ ही मामले को महामारी के रूप में देखा जा सकता है जैसे प्लेग स्पेनिश फ्लू इत्यादि। महामारी स्वास्थ्य और जीवन के नुकसान के साथ-साथ वित्तीय सामाजिक और आर्थिक नुकसान के माध्यम से भारी नुकसान पहुंचा सकती है।



स्वर्ण लता सिंह

सह आचार्य

गृह विज्ञान विभाग,

राजकीय कन्या महाविद्यालय

श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

1. महामारी एक रोग है एक ही समय में कई व्यक्तियों को प्रभावित करता है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में उस क्षेत्र में फैलना जहां लोग स्थाई रूप से प्रचलित नहीं है।
2. महामारी एक बीमारी का अस्थाई परंतु तेजी से प्रसार।
3. महामारी एक तेजी से संक्रमण के माध्यम से फैलने वाली बीमारी विश्वव्यापी किया। सर्वव्यापी महामारी (Pendemic) महामारी (Pendemic) स्थानिक (Epidemic) उपरोक्त तीन शब्दों को हम सामान्य तौर पर जाना आवश्यक है विश्वव्यापी या सर्वव्यापी महामारी को हमने विस्तार में जान दिया अब महामारी ऐसी बीमारी जो संक्रामक और फैलने वाली होती है परंतु जलवायु या पर्यावरण या स्थानीय परिवर्तन के कारण देश के बाहर नहीं फैलती है। स्थानिक ऐसी बीमारी जो सिर्फ किसी स्थान विशेष में वही के स्थानीय लोगों में फैलती है। कहा तो यह भी जा रहा है कोरोना खत्म नहीं होगा बस रूप बदल लेगा आज सर्वव्यापी है बाद में स्थानीय बन के रह जाए।

इस सर्वव्यापी महामारी ने जीवन के हर एक पहलू को बेहद प्रभावित किया है। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो इस बीमारी से प्रभावित ना हुआ हो ऐसे में समाज की महत्वपूर्ण संस्था इकाई भी जबरदस्त तरीके से प्रभावित हुई और इस कारण समाज भी अछूता नहीं रहा इन हलचल से। हमारा देश विभिन्नताओं का देश है यहां कदम कदम पर जाति प्रजाति धर्म एजलवायुए खानपान रहन.सहनए वेशभूषा और भौगोलिक परिस्थितियों में विभिन्नताएँ न दिखाई देती हैं। और यह सभी विभिन्नताएँ भारतीय समाज के मौलिक आधार हैं। सबका अपना पैटर्न है जीवन यापन का सबके अपने नियम मौलिक आधार अपनी निजता और संबंधों में भी बताए हैं और इन सभी विविधताओं के बावजूद भी देश में एकता है या कहें अनेकता में एकता का देश भारत। यहां की सामाजिक व्यवस्था उतनी ज्यादा परिपक्व व दुरुस्त है कि रिश्ते संस्कृतियों और परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी जाने पहचाने जाते हैं। इसी के कारण देश में सांस्कृतिक और बहुलता और विभिन्नता पाई जाती है। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार को समझना और जानना आवश्यक है। “फैमिली” शब्द का उद्गम लैटिन शब्द के 'Femulus' से हुआ है जो एक ऐसे समूह के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसमें माता-पिता, बच्चे, नौकर और दास हो। समाजशास्त्रीय दृष्टि से परिवार में पति, पत्नी एवं बच्चों का होना आवश्यक माना गया है। इनमें से किसी भी एक के अभाव में हम उसे परिवार न कहकर गृहस्थ (Household) कहेंगे।

मैकाइवर पेज के अनुसार, “परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन-पालन की व्यवस्था करता है।”

मरडॉक के अनुसार, “परिवार एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसके लक्षण सामान्य निवास आर्थिक सहयोग और

जनन है। इसमें दो लिंगों के मालिक शामिल है जिनमें कम से कम दो व्यक्तियों में स्वीकृत यौन संबंध होता है और जिन वाले व्यक्तियों में यौन संबंध है उनके अपने या गोद लिए हुए एक या अधिक बच्चे होते हैं।”

इन परिभाषा से हम समझ सकते हैं कि परिवार एक समूह एक संघ और संस्था के रूप में समाज में विद्यमान हैं। प्रत्येक समाज में परिवार के दो पक्ष होते हैं एक संरचनात्मक (structural) और दूसरा प्रकार्यात्मक (functional)।

सर्वविदित है देश में जब भी किसी भी प्रकार की आपदा विपदा आई देश का समाज मिल गया क्योंकि समाज का आधार “परिवार” सर्वप्रथम हिलता है चाहे प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़ तूफान सुनामी भूकंप हो या मानव जनित संक्रमण बीमारियां यह सबसे पहले परिवार को क्षति पहुंचाते हैं। परिवार का एक भी सदस्य अगर किसी भी प्रकार की आपदा से प्रभावित होता है तो संपूर्ण परिवार विचलित हो जाता है। जब इन आपदाओं से परिवार उबरने लगते हैं तो समाज खड़ा होने लगता है और समाज के खड़े होने से देश की परिस्थितियां नकारात्मक से सकारात्मक की ओर बढ़ने लगती हैं। विनाश से सृजनात्मकता की ओर देश चलने लगता है। किसी भी देश की मजबूत स्थिति उसका मजबूत समाज होता है सामाजिक ढांचा परिस्थितियां नियम और अनुशासन होता है। जब यह सब डगमगाने लगते हैं तो देश फिर जाता है देश हर वर्ष किसी ना किसी आपदा प्राकृतिक व मानवीय क्रूरता का सामना बहुत मजबूती के साथ करता रहा है। आज वर्तमान समय में देश एक सर्वव्यापी महामारी कोविड-19 से जूझ रहा है यह एक ऐसी बीमारी है जिसने संपूर्ण विश्व के देशों को हिला के रख दिया हर देश के आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सांस्कृतिक पहलुओं को धराशायी कर दिया है। ऐसे में जब देश आर्थिक चुनौती और स्वास्थ्य की चुनौतियां जो कि देश के हर नागरिक का अधिकार है से जूझ रही है वहीं पर सामाजिक असुरक्षा और अराजकता का भी सामना कर रही है। समाज में फैली इन सभी व्यक्तियों के लिए इस मुश्किल दौर में परिस्थिति पर नियंत्रण नहीं कर पाना है। किसी भी मुश्किल दौर में हम अपनी मौलिकता को खो देते हैं जहां हम अति संवेदनशील हो जाते हैं वहीं पर हम निष्ठुर और पाषाण हृदय वाले भी हो जाते हैं।

कोविड-19 की सर्वव्यापी महामारी ने देश के हर हिस्से को विचलित किया है। कोई भी कोना कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं जहां पर इसने सेंध न मारी हो, मंजर तो ऐसे यह जहां कहीं मानवता शर्मसार हुई है वहीं कहीं इंसानियत की बेमिसाल विशाल देखने को मिली है। जहां यह बीमारी बेईमान और भ्रष्ट लोगों के लिए आय का साधन बनी है तो कई लोगों ने अपनी आय को ही इसमें दान कर दिया। संपूर्ण देश में लोग कंधे से कंधा मिलाकर इस महामारी के दौर में अपने अपने तरीके से योगदान दे रहे हैं। ऐसे में परिवार रूपी संस्था के उतार-चढ़ाव

ऊंच-नीच लहरों पर गोते खा रही है। कोविड-19 महामारी का परिवार रूपी संस्था सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के प्रभाव देखने को मिले हैं और मिल रहे हैं। महानगरों के संडे रविवार वाले दिन पापा अपने बच्चों को रोज घर पर मिलते हैं। पिता को भी अपने बच्चों के करीब रहने का मौका मिला है। पत्नी की दिनचर्या से पति बेहद करीब से रूबरू हुए हैं तो बड़े बुजुर्गों के साथ रहकर उनकी उनकी हर जायज और नाजायज मांग और उन को करीब से देखने का मौका मिला है कुल मिलाकर कि परिवार एक ही समय में एक ही छत के नीचे अपने आपको सबके साथ पाकर बेहद खुश हैं। क्योंकि महानगरों के संडे वाले पापा हो या छोटे छोटे शहरों के रात वाले पापा हर व्यक्ति अब घर पर सिमट गया है। जिंदगी की वास्तविकता से मिल रहा है। अपने कामकाज के चक्कर में ऐसे बहुत सारे वाक्या जिनसे व्यक्ति अनजान या दूर रहता है। बच्चों को अपने माता-पिता की कमजोरियों और ताकत जानने का मौका मिला है बच्चों को बंद घर में पाबंदियों के साथ रहने के लिए समायोजन करना पड़ा है वही माता-पिता को भी बच्चों की संपूर्ण दिनचर्या और उनका व्यवहार स्वभाव सब नजदीक से जानने का अवसर मिल रहा है। यह सब अजीब लगता है कि क्या माता-पिता अपने बच्चों को नहीं जानते दरअसल आम दिनों में या कहें महामारी से पहले सभी परिवारों को एक निश्चित समय सारणी होती है कि सुबह उठते ही सब अपने अपने व्यक्तिगत कार्यों को निपटा कर अपने-अपने गंतव्यों की ओर निकल पड़ते हैं। पिता ऑफिसए मजदूरी करने या अपने कार्य को करने निकल पड़ते हैं। बच्चे विद्यालय महाविद्यालय का रुख कर लेते हैं। ग्रहणी अपने घर के कार्यों को निपटा कर खाली समय में अपनी रुचि के पसंद के कार्यों को कर अपने आप को ऊर्जावान बनाती है। जिन नाना.नानीए दादी. दादाए को मिलने के लिए पोता. पोती तरस जाते थे आज वह साथ रह रहे हैं और नैतिक संस्कार और मूल्य प्राप्त कर रहे हैं। निसंदेह जो एकल परिवार और ज्यादा एकल थे वह अब संयुक्त परिवार में बदल गए हैं। अस्थायी तौर पर जिन का फायदा परिवार के बाकी सदस्यों को भी मिला है निसंदेह। यह वह सकारात्मक नजरिया है जिसे सारे परिवारों ने पाया उसका आनंद भी उठाया पारिवारिक अहमियत को समझा और नैतिक सामाजिक व्यवहारिक आदि मूल्यों को सिखा। साथ ही सहनशीलता समायोजन संगठन आयोजन नियंत्रण और पुनः निरीक्षण जैसे कई ऐसी प्रक्रियाओं से परिवार के सदस्य गुजरे हैं। ये सब हमारी रोजमर्रा की जिंदगी से गायब है किसी के पास भी इतना समय नहीं कि वह अपने मूल्यों गुरु संस्कारों पर कार्य कर सकें। तो इस महामारी ने हमें समय दिया है। वह समय जो आज की भागदौड़ वाली जिंदगी में संभव नहीं है इस समय में हमें समय का आदर करना और इसका महत्व समझा दिया। साथ ही परिवार के सभी रिश्ते की अहमियत को भी हमारे सामने ला खड़ा कर दिया। हर रिश्ता महत्वपूर्ण है हर रिश्ते की जरूरत है

हमें हमारी जिंदगी में। औपचारिकताएं खत्म हुईं और जिम्मेदारियां और अपनेपन के अंकुरण व्यक्ति के मन में पनपने लगे। इतना सब सकारात्मक हुआ एक भय से। इसलिए यह कहना गलत न होगा कि भय अच्छे होते हैं। इस महामारी की विकरालता ऑल भयावह स्थिति ने हर उस दूरस्थ व्यक्ति को परिवार के समीप ला खड़ा किया। हर उस व्यक्ति की चिंता हमें सताने लगी जो किसी ना किसी प्रकार बात तरह से हम से जुड़ा हुआ है। हमारे अंदर मर चुकी संवेदनाएं फिर से जागृत हो गईं। हर उस व्यक्ति के लिए सहानुभूति पैदा हो गई जो किसी न किसी प्रकार से प्रभावित हुए थे। जो दुआएं कभी सिर्फ अपनों के लिए हुआ करती थी वह आप सभी के लिए होने लगी। टीवी पर समाचार देखते हुए आंखें नम होने लगी जब दिल दहला देने वाली खबरें सामने आने लगी। आश्चर्य तो इस बात का है कि जिन्हें हम जानते नहीं उनके लिए भी आंखें बड़ती और हाथ दुआओं और मदद के लिए उठे। यह सब क्या है? ऐसा नहीं कि व्यक्ति के दिल में धड़कन नहीं जब्बात नहीं है लेकिन एक मशीनी जिंदगी जीते जीते सब कुछ यांत्रिक हो गया था जो इस संकटग्रस्त माहौल में पिघल कर संवेदनाएं जागृत हो गईं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस आलेख का उद्देश्य यही है कि सब परिवार के सदस्य जन जानने की कोशिश करे व जाने की जो ये भयाव्य परिस्थिति चल रही है, उससे थोड़े संयम, सहनशीलता व समझदारी से टाला जा सकता है। अपनी उदास, डिप्रेशन, तनाव, दुःख, फ्रस्टेशन इन सभी को योग, व्यायाम करके काफी हद तक कम कर सकते हैं। ये घड़ी मुश्किल जरूर है परन्तु असंभव नहीं है। हमें सकारात्मक दृष्टि से सोचना होगा कि इस महामारी के कारण ही हमें यह समय मिला है जहाँ पर हम अपनी क्षमताओं को निखार सकें जो रुचियाँ भुला दी गई थी उनको फिर से जिया जा सके। अपने शौक को पूरा किया जा सके। हमारी समायोजन की क्षमता बढ़ती है आवश्यकता ही नये नये अविष्कार करवाती है। युवा वर्ग अपने कौशलो को जाने उन्हें निखारे और अपनी क्षमताओं पर कार्य कर भविष्य के लिए तैयार हो जाये।

निष्कर्ष

इस महामारी में सिर्फ सकारात्मकता ही सामने आई और ऐसा नहीं है क्योंकि यह शाश्वत सत्य है कि हर सिक्के के 2 पहलू होते हैं। घटना दुर्घटना के अलग-अलग नजरिए होते हैं। जहाँ परिवार में अटूटता आई वहीं पर घरेलू हिंसा का ग्राफ काफी ऊपर जाता हुआ नजर आया। समाज में बहुत सारी घटनाएं अब रोज गंगा की हो गई थी पहले तो ऐसी घटनाएं कभी-कभी होती थी फायर अब लगभग रोज होने लगी महामारी के कारण लोग डाउन हो गया सैकड़ों करोड़ों लोग बेकार व बेरोजगार हो गए जीवन यापन करने के जरिए खत्म और कम हो गए। मजदूर वर्ग शहरों से पलायन कर अपने शहर अपनों के पास जाने लगा सब लोगों ने यह सोच कर शब्द किया

कि कुछ समय की बात है जल्दी सब ठीक हो जाएगा परंतु हकीकत कुछ और ही निकली हम फिर से एक संकटकालीन समय में आ गए हैं। आज परिवार के सदस्यों के बीच सहनशीलता की कमी आ गई है। धैर्य नहीं रहा। हर वक्त एक ही तरह के माहौल में एक दूसरे के साथ रहकर संबंधों में कड़वाहट भी आई है। घर के सभी सदस्य एक तनाव को झेल रहे हैं ऐसे में जब भी यह तनाव का प्रेशर बढ़ता है तो घर के सदस्य एक दूसरे के ऊपर चिल्ला कर झगड़ा करके माहौल को और ज्यादा तनावग्रस्त कर लेते हैं। रोजमर्रा के कार्यों से जो स्पेस एक गृहणी एक पिता को बच्चों को मिलता था वह अब नहीं मिल पा रहा है जिसके चलते परिवारों में अजीब सा डिप्रेशन वाला माहौल है। किसी किसी परिवार में रोजगार खत्म हो जाने से आर्थिक तंगी का माहौल हैए कभी परिवार में अपनों में से किसी को खोने का गम है। जो प्राणी अत्याधिक सामाजिक हुआ करता था वह अब घर में आइसोलेट हो कर रह गया।

महिलाओं पर कार्य का बोझ ज्यादा हो गया है। लॉक डाउन के कारण वर्क फ्रॉम होम की वजह से स्थिति और भी ज्यादा विकट हो गई है। महिलाओं पर गृह कार्य की जिम्मेदारियों के साथ साथ ऑफिस के कार्य भी हैं जिनके समय पर पूरा करके देना होता है ऐसे में घंटों लैपटॉप और मोबाइल पर रहना स्वास्थ्य पर विपरीत असर डाल रहा है शारीरिक और मानसिक रूप से व्यक्ति बीमार हो रहा है। बहुत सारे लोगों की नौकरियां चली गई हैंए युवा वर्ग को नौकरी नहीं मिल रही है। इन सब बातों का विपरीत अंजाम परिवार को किसी न किसी रूप में झेलना पड़ रहा है।

पारिवारिक संबंधों में स्थायित्व की कमी देखी जा रही है। एक दूसरे की निजता और स्पेस में सेंध लग रही है। पारिवारिक रिश्ते दरक रहे हैं। ऐसा नहीं है कि यह सब मीडिया में नहीं है या अखबारों की हेड लाइन नहीं है परंतु महामारी इतनी बड़ी है की पारिवारिक संबंधों के चटकने की आवाज कम सुनाई दे रही है।

दुख नहीं होगा तो सुख की अहमियत नहीं होगी उदासी नहीं होगीए तो खुशी कैसे जानोगे। ऐसे में कई मनोचिकित्सक इस पर कार्य कर रहे हैं कि घर में एक दूसरे के साथ रहकर संबंधों में कड़वाहट ना आ जाए। इसके लिए उपाय भी बताते रहते हैं। हावर्ड मेडिकल यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञ और मैसाचुसेट्सए जनरल अस्पताल के मनोचिकित्सक शर्द्धाक्टर रॉबर्ट वॉल डिगरश् कहते हैं प्यह समय संयम के साथ समझ बनाए रखने में हैं। इसके लिए कुछ नियम बना कर उनकी पालना करें तो काफी राहत मिलेगी।

1. अपना और अपने लिए समय निकालें समय बनाएं ना कि हर वक्त एक दूसरे के आमने सामने रहे।
2. एक दूसरे को इस वक्त ज्यादा समझने की आवश्यकता है अपनी दिनचर्या को लचीली रखें।

3. हर वक्त खुशी या खुश नहीं रहा जा सकता है। प्रांतिक संदेशों को आने जाने दें।
4. आपस में बात करने के तरीके को ऐसे ढंग से रखो कि जिसका आरोप-प्रत्यारोप ना हो एक दूसरे पर इल्जाम ना हो आपस में एक दूसरे की मदद करें मानसिक स्थिति को समझें आपस में बात जरूर करें। खीज नहीं। हमेशा यह साबित करने की कोशिश ना करें कि सारी गलती सामने वाले की है।
5. हम जान गए हैं कि कोविड-19 एक ऐसा संकट है जिसमें लड़ने के लिए संयम आपसे साथ धैर्य समझ और सुलझा पन होना अत्यंत जरूरी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान पत्रिका
2. वनिता मासिक पत्रिका
3. भारतीय समाज - एम. एल. गुप्ता
4. मानव व विकास एवं पारिवारिक संबंध
5. बाल मनोविज्ञान और पारिवारिक सम्बंध
6. मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययन
7. दैनिक भास्कर